देवनागरी उर्दू

हज़रत ईसा अल-मसीह का तीसरा हुक्म यानी दुआ करना।

हज़रत ईसा अल-मसीह का तीसरा हुक्म यानी दुआ करना।

खुदावंद ईसा अल-मसीह का तीसरा हुक्म है कि हम दुआ करें। पहले दो हुक्म थे – तौबा करना, ईमान लाना, और पाक गुस्ल यानी बपतिस्मा लेना। अब इस सबक़ में, हम सीखेगें कि किस तरह खुदावंद ईसा अल-मसीह के साथ चलते हुए हमें आगे बढ़ना है। आगे बढ़ने के लिए हमें दुआ करनी होगी और इंजील शरीफ़ पढ़नी होगी। अगला हुक्म इंजील शरीफ़ सीखने के बारे में होगा।

खुदावंद ईसा अल-मसीह बहुत अज़ीम हैं, इसलिए हमें ध्यान से उनके हुक्मों पर अमल करना चाहिए। उन्होंने अपने शागिर्दों से फरमाया:

“अगर तुम मुझे प्यार करते हो तो मेरे अहकाम के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारोगे।” (यूहन्ना 14:15)।

याद कीजिए, वही खुदावंद ईसा अल मसीह जिन्होंने बीमारों को ठीक किया, मुर्दों को जिंदा किया। उन्होंने हमारे गुनाहों के लिए सूली पर अपनी जान दी, वो दफनाये गए, और वो तीसरे दिन ज़िंदा हुए। वाकई, उनके अहकाम अमल करने लायक हैं।

आज का सबक़ दुआ के बारे में है, जो कि मत्ती उसका बाब 6 आयत 5 से 15 में दर्ज है, जहाँ खुदावंद ईसा अल-मसीह ने अपने शागिर्दों को दुआ करनी सिखाई। उन्होंने फरमाया:

दुआ करते वक़्त रियाकारों की तरह न करना जो इबादतख़ानों और चौकों में जाकर दुआ करना पसंद करते हैं, जहाँ सब उन्हें देख सकें। मैं तुमको सच बताता हूँ, जितना अज्र उन्हें मिलना था उन्हें मिल चुका है।

इसके बजाए जब तू दुआ करता है तो अंदर के कमरे में जाकर दरवाज़ा बंद कर और फिर अपने बाप से दुआ कर जो पोशीदगी में है। फिर तेरा बाप जो पोशीदा बातें देखता है तुझे इसका मुआवज़ा देगा। दुआ करते वक़्त ग़ैरयहूदियों की तरह तवील और बेमानी बातें न दोहराते रहो। वह समझते हैं कि हमारी बहुत-सी बातों के सबब से हमारी सुनी जाएगी। उनकी मानिंद न बनो, क्योंकि तुम्हारा बाप पहले से तुम्हारी ज़रूरियात से वाक़िफ़ है,

बल्कि यों दुआ किया करो,

ऐ हमारे आसमानी बाप,

तेरा नाम मुक़द्दस माना जाए।

तेरी बादशाही आए।

तेरी मरज़ी जिस तरह आसमान में पूरी होती है ज़मीन पर भी पूरी हो।

हमारी रोज़ की रोटी आज हमें दे।

हमारे गुनाहों को मुआफ़ कर

जिस तरह हमने उन्हें मुआफ़ किया

जिन्होंने हमारा गुनाह किया है।

www.talemulkalam.org

और हमें आज़माइश में न पड़ने दे

बल्कि हमें इबलीस से बचाए रख। [क्योंकि बादशाही, क़ुदरत और जलाल अबद तक तेरे ही हैं।]

क्योंकि जब तुम लोगों के गुनाह मुआफ़ करोगे तो तुम्हारा आसमानी बाप भी तुमको मुआफ़ करेगा।

लेकिन अगर तुम उन्हें मुआफ़ न करो तो तुम्हारा बाप भी तुम्हारे गुनाह मुआफ़ नहीं करेगा। आमीन!

हम यहाँ से खुदा के बारे में क्या सीखते हैं?

सबसे पहले, खुदावंद ईसा अल-मसीह ने हमें सिखाया कि खुदा से इस तरह दुआ करें जैसे आप अपने बाप से। ये बहुत बड़ी बात है कि हम खुदा को अपना बाप कह सकते हैं! वो सबसे अच्छा बाप है, क्योंकि वो रहमत वाला और ताक़तवर है। वो हमारा आसमानी बाप है जो हमें हमारे दुनियावी बाप से भी ज्यादा मोहब्बत करता है।

कभी-कभी "बाप" का मतलब ग़लत समझा जाता है। कुछ लोग कहते हैं कि मसीही मानते हैं खुदा ने बीवी ली और बच्चे पैदा किए। अस्तग़फ़िरुल्लाह! ये कुफ़्र है! कोई भी खुदावंद ईसा अल-मसीह का मानने वाला ये बात नहीं मानता। और न ही हम ये मानते हैं कि खुदा ने कभी जिस्मानी बेटे पैदा किए। खुदावंद ईसा अल-मसीह की पैदाइश अलग और मौजिज़ाती थी। वो खुदा के रूहानी बेटे थे, जिस्मानी नहीं। जब हम खुदा को बाप कहते हैं तो इसका मतलब है कि वो अपने बंदों से बाप जैसी मोहब्बत करता है। लेकिन वो मोहब्बत दुनियावी बाप से भी ज़्यादा अच्छी है, क्योंकि दुनियावी बाप गुनाहगार होते हैं। हमारा आसमानी बाप हमारे गुनाह माफ़ करता है और हमारी ज़रूरतें पूरी करता है।

इस तालीम से हम खुदा के बारे में और क्या सीखते हैं?

खुदा रियाकारी यानी दिखावा यानी ढोंग से नफ़रत करता है। रियाकार लोगों को दिखाते हैं कि वो अच्छे हैं, लेकिन उनके दिल खुदा से दूर होते हैं। खुदा को ऐसा मज़हब पसंद नहीं है। वो चाहता है कि लोग दिल से उससे मोहब्बत करें। इसलिए हमें अंदर से बदलना है ताकि खुदा के करीब हो सकें।

अब हम दो लोगों की गलत तरीके से की गई दुआ को देखते है।

पहला दुआ का तरीका जो गलत है वो है, कि ऐसे रियाकार लोग जो खुदा के बजाय लोगो को दिखाने के लिए दुआ करते हैं। जैसे खुदावंद ईसा अल मसीह ने फरमाया: "रियाकार लोग ईबादतखानो और चोको में खड़े होकर दुआ करना पसंद करते हैं ताकि लोग उन्हें देखें।" अगर कोई आदमी सिर्फ़ लोगों को दिखाने के लिए दुआ करता है, तो उसकी दुआ खुदा को पसंद नहीं। सही तरीका ये है कि अकेले में दुआ करें। तब हमें दुआ का असली इनाम मिलेगा – जो कि है खुदा के साथ मज़बूत रिश्ता है।

दूसरा दुआ का तरीका जो गलत है वो है, कि लोग तवील और बेमानी बातें दोहराते हैं और सोचते हैं कि बस ज़्यादा बोलने से उनकी दुआ सुनी जाएगी। खुदावंद ईसा अल-मसीह उन लोगों की बात कर रहे थे जो खास तरह की दुआएँ पढ़ते थे, और उन्हें लगता था कि इन अल्फ़ाज़ में कोई ताक़त है। बहुत से लोग ऐसी दुआएँ याद करते हैं जो किसी और ज़ुबान में होती हैं, और उन्हें समझ भी नहीं आतीं। वो सोचते हैं कि यही खुदा चाहता है।

लेकिन अगर हमारा खुदा हमारा आसमानी बाप है, तो क्यों चाहेगा कि उसके बच्चे उससे अजनबी ज़ुबान में तवील और बेमानी बातें दोहराते रहें, जिसे वो खुद नहीं समझते? ये सही तरीका नहीं है। सही दुआ ये है कि हम अपना दिल खुदा के सामने खोल दें और उससे ऐसे बात करें जैसे अपने बाप से करते हैं। वो अपने बच्चों की असली आवाज़ सुनना चाहता है!

www.taleemulkalam.org

तो खुदा क्या चाहता है कि हम किस तरह से दुआ करें?

बहुत आसान है। हमें ऐसे दुआ करनी चाहिए जैसे बच्चे अपने बाप से बात करते हैं। अपनी ज़रूरतें खुदा को बताऐं, अपने दिल की बातें करें। वो सुनता है, वो आपकी परवाह करता है।

कुछ लोग पूछते हैं: "कितनी बार दुआ करनी चाहिए?"

खुदावंद ईसा अल-मसीह ने कोई खास गिनती के बारे में कोई हुक्म नहीं दिया। बल्कि उन्होंने खुदा के साथ रिश्तों पर ज़ौर दिया। उन्होंने फरमाया, दुआ का मक़सद खुदा के करीब होना है। बच्चा अपने प्यारे बाप से कितनी बार बात करना चाहता है? जितनी बार भी हम बात करना चाहें! तो ऐसे ही हमें दुआ करनी चाहिए। शुरुआत सुबह उठकर करें, और रात को सोने से पहले दुआ करें। फिर धीरे-धीरे दिन में भी और दुआ करते रहें। खुदावंद ईसा अल-मसीह ने ये भी सिखाया कि दुआ के लिए कोई खास जगह नहीं, कोई खास वक्त नहीं। उन्होंने कोई रस्में नहीं दीं। लेकिन ये नमूना-दुआ हमारे लिए मददगार है। अगर आपको दुआ करनी नहीं आती तो इस दुआ से शुरू करें, फिर अपने अल्फ़ाज़ में, अपनी ज़ुबान में खुदा से बात करे।

चलिए, अब ये दुआ फिर से करे, और इसके बाद, अपने अपने अल्फाज़ में अपने आसमानी बाप से और दुआ करे।

हे हमारे बाप, जो आसमान पर है,
तेरा नाम पाक समझा जाए।
तेरी बादशाही आए।
तेरी मरज़ी ज़मीन पर वैसे ही पूरी हो जैसे आसमान पर होती है।
आज हमें हमारी रोज़ की रोटी दे।
और हमारे गुनाह माफ़ कर, जैसे हमने भी अपने गुनहगारों को माफ़ किया।
और हमें आज़माइश में न डाल, बल्कि हमें बुराई से बचा।

हमारे गुनाहों को मुआफ़ कर, जिस तरह हमने अपने गुनहगारों को मुआफ़ किया।

और हमें आज़माइश में न पड़ने दे, बल्कि हमें इबलीस से बचाए रख।
आमीन।

उम्मीद है कि आज आपने दुआ का तरीका सीखा होगा। खुदा से एक मज़बूत रिश्ता बनाने के लिए हमें खुदावंद ईसा अल-मसीह के हुक्म पर अमल करते हुऐ खुदा से दुआ करनी चाहिए.

www.taleemulkalam.org

हमसे जुड़ने के लिए आइकॉन पर क्लिक करें.....